

सर्वक्षण विधि के लाभ (advantages) :- सामाजिक सर्वेक्षण का प्रयोग आर्थिक, मूल्य, प्रत्यक्षीकरण आदि के संबंधित समस्याओं में किया जाता है। प्रथा जन प्रवाद और वोटिंग संबंधी व्यवस्था में भी इसका उपयोग इनके मनोवैज्ञानिकों Lazarus, Field, Berenson and Gaudet ने किया है।

प्रमुख लाभ निम्न प्रकार है -

1. सर्वेक्षण अनुसंधानों के द्वारा जितना व्यापक और विस्तृत अध्ययन किया जाता है उतना अन्य विधि द्वारा नहीं होता है।
2. इस विधि द्वारा अध्ययन कला व्यटना (यहाँ पर प्रत्यक्ष रूप से अध्ययन इकाई के सम्पर्क में आता है। इस प्रकार वह अध्ययन इकाइयों के मनोभावों विचारों आदि को अधिक अच्छी तरह जानने में सफल होता है।
3. आधुनिक समाज मनोविज्ञान में सर्वेक्षण अनुसंधान के इन्तर्गत अनेक तकनीकी का विकास करने इसे वैज्ञानिक रूप दिया जाता है। फलस्वरूप जो डांकें और परिणाम प्राप्त होते हैं वह परिशुद्ध, यथार्थ और विश्वसनीय होते हैं। सर्वेक्षण अनुसंधान में Random Sampling का बहुत महत्व है। इससे अनुसंधान का स्वरूप बहुत कुछ वैज्ञानिक बन जाता है।

(4) सर्वेक्षण अनुसंधान अन्य विधियों की अपेक्षा बहुत अधिक सुविधाजनक है।

(5) यह अनुसंधान मितव्ययी (Economical) भी है।

सर्वेक्षण विधि के दोष या सीमाएँ (Demerits or limitations) :- सामाजिक सर्वेक्षण के कुछ प्रमुख

दोष निम्न प्रकार है :-

- (1) यद्यपि इस प्रकार के अध्ययन व्यापक और विस्तृत होते हैं फिर भी वे सूक्ष्म व गहन

नहीं होते हैं।

2. अध्ययन इकाइयों से जो प्राप्त होते हैं उनमें छत्रिमता की मात्रा बहुत रहती है।
3. इस अनुसंधान के द्वारा केवल साक्षात्कृत और व्यापक समाप्ता का ही अध्ययन उपयुक्त होता है। विशेष रूप से वह समाप्तों जिन्का रूप व्यापक व विस्तृत होता है उनका ही अध्ययन इस विधि द्वारा किया जाता है।
- (4) व्यापकता की दृष्टि से देखा जाये तो इस अनुसंधान में Random sampling करने में अनेक कठिनाइयाँ आती हैं कई बार Random sampling करना बहुत कठिन या असम्भव होता है।
5. यदि छात्रों का संकलन, साक्षात्का के द्वारा किया जाता है तो साक्षात्का की अनेक सीमाएँ इस प्रकार के अनुसंधान की सीमाओं को महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करती हैं।
6. इस प्रकार के अनुसंधान के परिणामों पर अध्ययनकर्ता और पीछे कर्मचारी मनोहातियों, विचारों और पूर्वग्रहों का प्रभाव पड़ता है।